AUS2A10a-hindoustani-2012-11-05

करवा चौथ

करवा चौथ स्त्रियों का त्यौहार है। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को इसे ख़ासकर पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, और राजस्थान में मनाते हैं। इसे सुहागिन (सौभाग्यवती) स्त्रियाँ मनाती हैं लेकिन कुछ इलाकों में कुँआरी कन्याएँ भी मनाती हैं। इस त्यौहार के दिन स्त्रियाँ व्रत रखती है जो सुबह के ४ बजे से रात में चंद्रमा दर्शन तक चलता है। ग्रामीण ही नहीं बल्कि आधुनिक औरतें भी इसे बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाती हैं। वे पति की दीर्घायु तथा अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन व्रत रखकर रात में चन्द्रमा की पूजा करने के बाद व्रत तोड़ती हैं।

करवा चौथ मनाने की एक कहानी

एक समय की बात है कि एक करवा नाम की पतिव्रता स्त्री अपने पति के साथ नदी के किनारे के गाँव में रहती थी। एक दिन उसका पति नदी में स्नान करने गया। स्नान करते समय वहाँ एक मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। वह मनुष्य करवा-करवा कह के अपनी पत्नी को पुकारने लगा।

उसकी आवाज सुनकर उसकी पत्नी करवा भागी चली आई और आकर मगर को कच्चे धागे से बाँध दिया। मगर को बाँधकर यमराज के यहाँ पहुँची और यमराज से कहने लगी – 'हे भगवन! मगर ने मेरे पति का पैर पकड़ लिया है। उस मगर को आप अपने बल से नरक में ले जाओ।'

यमराज बोले- अभी मगर की आयु शेष है, अतः मैं उसे नहीं मार सकता। इस पर करवा बोली, अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं आप को श्राप देकर नष्ट कर दूँगी। सुनकर यमराज डर गए और उस पतिव्रता करवा के साथ आकर मगर को यमपुरी भेज दिया और करवा के पति को दीर्घायु दी। हे करवा माता! जैसे तुमने अपने पति की रक्षा की, वैसे सबके पतियों की रक्षा करना।'

गणगौर (= गनगौर) व्रत

यह त्यौहार भी स्त्रियों का त्यौहार है। अलग-अलग प्रदेशों में इसे अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। प्राचीन समय में पार्वती ने शंकर भगवान को पति के रूप में पाने के लिए व्रत और तपस्या की। शंकर भगवान तपस्या से प्रसन्न हो गए और उन्होंने पार्वती से वरदान माँगने के लिए कहा। पार्वती ने उन्हें ही वर के रूप में पाने की अभिलाषा की। पार्वती की मनोकामना पूरी हुई और पार्वती जी की शिव जी से शादी हो गयी। तभी से कुँवारी लड़कियाँ इच्छित वर पाने के लिए गणगौर की पूजा करती हैं। सुहागिन स्त्री पति की लम्बी आयु के लिए यह पूजा करती हैं। होली के दूसरे दिन से पन्द्रह दिन तक हर रोज गणगौर पूजा की जाती है। चैत्र शुक्ल द्वितीया के दिन किसी नदी, तालाब या सरोवर पर जाकर स्त्रियाँ अपनी पूजी हुई गणगौरों को पानी पिलाती हैं और दूसरे दिन सायंकाल के समय उनका विसर्जन कर देती हैं। गणगौर पूजा चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि से आरम्भ होती है। सोलह दिन तक सुबह जल्दी उठ कर बगीचे में जाती हैं, दूब व फूल चुन कर लाती है। दूब लेकर घर आती है उस दूब से दूध के छींटे मिट्टी की बनी हुई गणगौर माता को देती है। थाली में दही पानी सुपारी और चांदी का छल्ला आदि सामग्री से गणगौर माता की पूजा की जाती है।